जीव का कोई आकार नहीं होता : आचार्य श्री महाप्रज्ञ

बीदासर, 20 मार्च।

आचार्यप्रवर ने तेरापंथ भवन में राजा प्रदेशी और केशी स्वामी के प्रसंग की चर्चा करते हुए फरमाया कि ''दर्शन का बड़ा विषय है मूर्त्त और अमूर्त्त। जैन दर्शन ने बहुत काम किया है कि पदार्थ अमूर्त्त भी होते हैं। पांच अस्तिकाय हैं, धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय और जीवास्तिकाय ये सारी दुनिया इन पांच अस्तिकायों का ही विस्तार है। इनमें चार अमूर्त्त है जिनमें कोई रूप, वर्ण, गंध, रस, स्पर्श नहीं है ये सब भौतिक जगत की बातें है, भौतिक जगत जिसमें पुद्गल है उसमें वर्ण, गंध, रस, स्पर्श है। एक अमूर्त्त तत्व और दूसरा मूर्तिमान तत्व है, आकारवाला तत्त्व है, जिसका कोई आकार है। जीव का कोई आकार नहीं है। बड़ा गहन विषय है कि बिना आकार का तत्त्व है। आकार केवल भौतिक वस्तु का पुद्गल का होता है।''

आचार्यप्रवर ने फरमाया कि इस पौद्गलिक जगत में जीव को आत्मा को मानना आश्चर्य है न मानने में कोई आश्चर्य नहीं है। इस पुद्गल जगत में अभौतिक सत्ता की स्वीऔति आश्चर्य है। मरने के बाद जन्म होता है हमें दिखाई नहीं देता, मृत्यु के उपरांत जन्म की सत्ता को स्वीकार करना आश्चर्य है। नास्तिक होना सबसे सीधा मार्ग है कोई कठिनाई नहीं है क्योंकि सारा सामने दिख रहा है, आस्तिक होना अमूर्त्त तत्त्व को स्वीकार करना बहुत कठिन बात है। बहुत अध्ययन, चिंतन मनन करने के बाद स्वीकार करने की बात होती है।

आचार्यप्रवर ने कहानी में फरमाया - 'केशी स्वामी ने जब प्रदेशी राजा से कहा कि राजन! जब तुम हवा को हथेली में रखकर नहीं दिखा सकते तो फिर जीव को मैं कैसे दिखा सकता हूं, तुम स्वयं सोचो।'' राजा का आग्रह समाप्त हो गया। केशी स्वामी ने कहा - ''तुम्हें पहला सिद्धांत दिया था कि तुम स्थूल में अटके हुए हो, सूक्ष्म को समझने का प्रयत्न करो। दूसरा सिद्धांत यह दे रहा हूं कि हमारे विश्व में दो प्रकार के पदार्थ होते हैं एक मूर्त और दूसरा अमूर्त्त।''

युवाचार्यप्रवर ने अपने प्रवचन में मृत्यु के प्रति जागरूक रहने की प्रेरणा देते हुए फरमाया कि मौत बड़े से बड़े प्राणी को अपना ग्रास बना लेती है और मौत आने के अनेक रास्ते हैं। इसलिए व्यक्ति मृत्यु के प्रति जागरूक रहते हुए यह चिंतन करे कि आज मैंने अच्छा क्या किया, यदि वह प्रतिदिन अच्छा काम करता है तो दिन अच्छा है, अगर दुष्औत किया है तो मेरा दिन दुष्फल देने वाला है। ऐसा इसलिए सोचना चाहिए कि जो सूर्य उगा है शाम को अस्त हो गया है। यह सोचना चाहिए कि केवल सूर्य अस्त ही नहीं हुआ है अपितु वह हमारे जीवन का एक टूकड़ा लेकर गया है।

बीदासर, 20 मार्च।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाप्रज्ञ के सान्निध्य में चूरू जिले के अणुव्रत कार्यकर्त्ताओं की एक गोश्ठी तेरापंथ भवन में आयोजित हुई। आचार्य महाप्रज्ञ ने इस अवसर पर कहा कि चुरू जिले में अणुव्रत के कार्य को विस्तार देने हेतु अणुव्रत चुनाव शुद्धि अभियान तथा अहिंसा प्रशिक्षण का कार्य शुरू करना चाहिए। इस अवसर पर अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल ने मार्गदर्शन करते हुए कार्यकर्त्ताओं को प्रेरणा प्रदान की। सभी कार्यकर्ताओं ने बीदासर अणुव्रत समिति के अध्यक्ष चोथमल बोथरा को इस कार्य के लिए जिलाध्यक्ष मनोनीत किया। यह तय किया गया कि दिनांक 29 मार्च से चुरू जिले में सुनियोजित रूप से चुनाव शुद्धि अभियान चलाने के लिए आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में जिले के सभी अणुव्रत कार्यकर्त्ताओं को आमंत्रित किया जावे। इस अवसर पर मदनलाल इनाणियां, हाजी शम्सुदीन स्नेही, विजयसिंह बोरड़, पीथाराम गुलेरिया व कन्हैयालाल इनाणियां आदि उपस्थित थे।

- अशोक सियोल

99829 03770